सुरेश मिश्र

चार सौ साल पहले का बुरहानपुर शहर

एक विदेशी यात्री की जुबानी

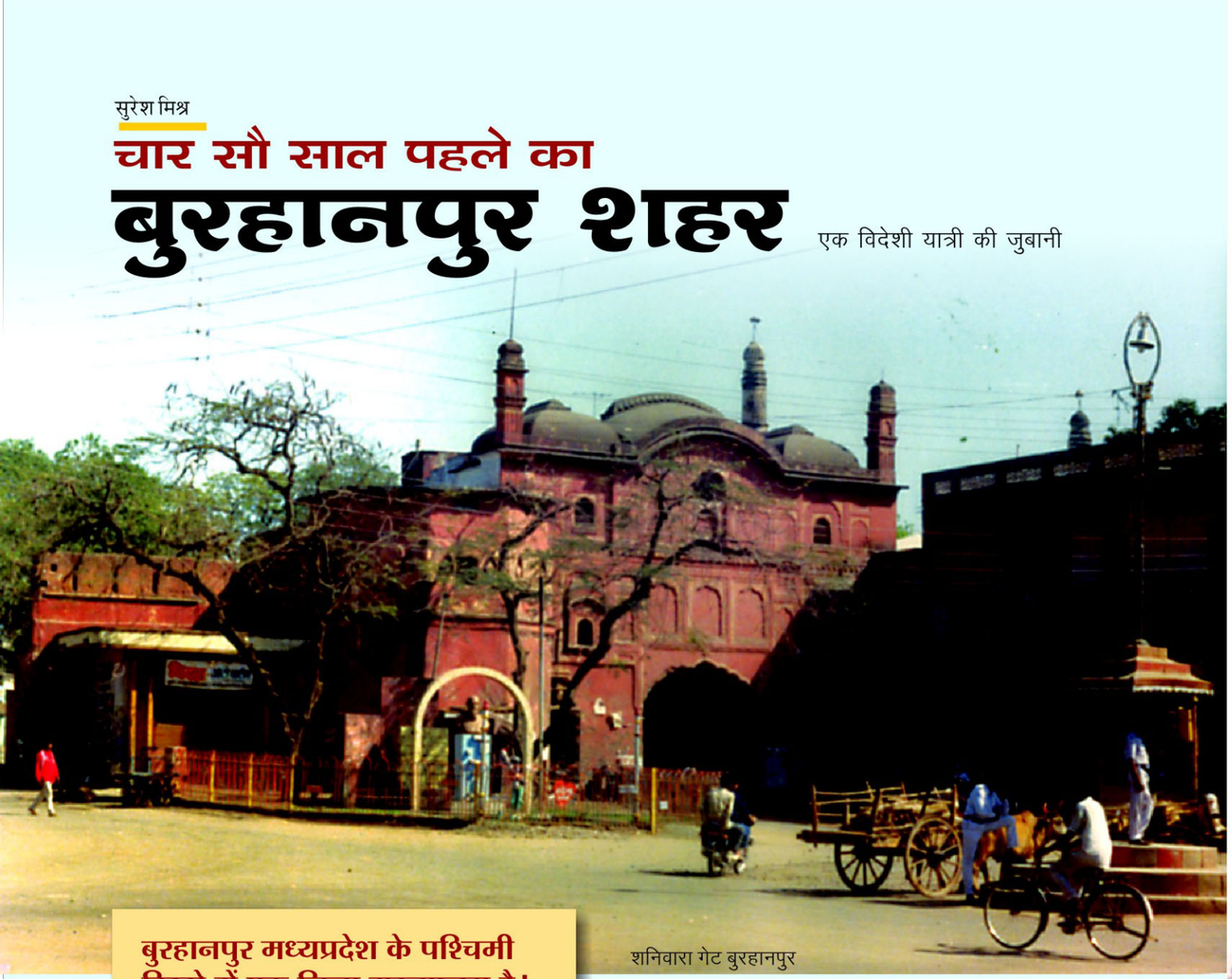

शनिवारा गेट बुरहानपुर

बुरहानपुर मध्यप्रदेश के पश्चिमी हिस्से में एक ज़िला मुख्यालय है।

मुगल बादशाह जहाँगीर के ज़माने में यह शहर खानदेश सूबे (मुगल शासित क्षेत्र का आखिरी सिरा) का मुख्यालय था। उस समय बुरहानपुर सूरत-आगरा मार्ग का एक खास शहर था। इंग्लैण्ड की ईस्ट इंडिया कम्पनी की फैक्टरी सूरत में थी। यह एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। सूरत से विदेशी माल बुरहानपुर होकर भारत के उत्तरी हिस्सों को जाता था। और सूरत के बन्दरगाह से उत्तर भारत का माल विदेशों को भेजा जाता था।

इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम का राजदूत – टामस रो – सूरत के बन्दरगाह में उतरा। वहाँ से आगरा जाते समय 14 नवम्बर, 1615 को वह बुरहानपुर पहुँचा। अपनी पूरी यात्रा का वर्णन उसने अपनी डायरी में लिखा है। 14 नवम्बर से 27 नवम्बर 1615 तक वह बुरहानपुर में रहा।

टामस रो अपनी डायरी में लिखता है:

मैं बुरहानपुर पहुँचा जो सूरत से करीब 223 मील दूर पूर्व की तरफ है। मार्ग में पड़ने वाला प्रदेश दयनीय और वीरान है। कस्बे और गाँव मिट्टी के बने हैं। आराम करने लायक एक भी मकान नहीं है। बहादुरपुर बुरहानपुर से 2 मील पहले है। आजकल यहाँ शस्त्रागार है। मैंने पीतल की तोपें देखीं जो काफी छोटी हैं और उनके छेद बहुत बड़े हैं। बहादुरपुर और बुरहानपुर के बीच मुझसे कोतवाल मिला। वह मुझे उस सराय में लाया जहाँ मुझे ठहरना था। सराय का दरवाज़ा तो सुन्दर था पर जब मैं अन्दर गया तो मैंने वे चार कमरे देखे जहाँ मेरे रहने की व्यवस्था थी। ये कमरे छोटे और भट्टी की तरह थे और इनकी छत गोल थी। मैं बहुत परेशान हुआ।

टामस रो आगे लिखता है:

मेरे पास अपने तम्बू थे। मैंने कोतवाल को खबर भेजी कि मैं शहर के बाहर कहीं और जाकर रुकूँगा। उसने मुझे सुबह तक धीरज रखने के लिए कहा। बुरहानपुर में जहाँगीर का बेटा परवेज शासक के रूप में रहता है उसके साथ खानखाना है जो एक महान मुगल सेनापति है। उसके पास चालीस हज़ार घुड़सवार हैं।

नाम तो शाहजादे का है पर वास्तविक सत्ता खानखाना के हाथ में है। यह खानखाना और कोई नहीं बल्कि अब्दुर्रहीम खानखाना था, जो अच्छा सेनानायक होने के साथ-साथ अपने ज़माने का हिन्दी का प्रसिद्ध कवि भी था। उसके कितने ही दोहे तुम्हें लोगों से सुनने को मिल जाएँगे।

दूसरे दिन यानी 15 नवम्बर का विवरण:

मैं एक खूबसूरत बगीचे में अपना तम्बू लगाकर कुछ लोगों के साथ वहीं रुक गया। साथ का सामान मैंने सराय में ही छोड़ दिया था। कोतवाल आया और उसने ठहरने के स्थान के बारे में खेद प्रकट किया। उसने कहा कि यह सारे शहर में सबसे अच्छा स्थान है। बाद में मैंने इसे सच भी पाया, क्योंकि शहर बड़ा तो है पर वहाँ के मकान मिट्टी के बने हैं। झोंपड़ियों से बेहतर नहीं हैं। सिर्फ शाहज़ादा, खानखाना और कुछ लोगों के घर ही अच्छे हैं।

आने वाले दिनों में टामस रो अपने तम्बू में ही रहा। शहर के कोतवाल ने उसके लिए ढँकी तश्तरियों में इस इलाके के तरीके से बना गोश्त बीस थालियों में भेजा। अगले दिन यानी 18 नवम्बर को टामस रो शाहज़ादा परवेज से मिलने गया।

इस मुलाकात के बारे में वह लिखता है:

मैं शाहज़ादे से मिलने गया और उसे देने के लिए भेंट भी ले गया। कोतवाल मुझे भीतर ले गया। दरबार के बाहर लगभग एक सौ सशस्त्र घुड़सवार खड़े थे। दरबारी दोनों और पंक्तिबद्ध खड़े थे। शहर के सारे बड़े लोग गुलामों की तरह गोलाई में खड़े थे। दरबार के अन्दर शाहज़ादा छतरी वाले एक सिंहासन पर बैठा था। सामने एक गलीचा बिछा था। उस स्थान के ऊपर एक भव्य चन्दोबा था और नीचे गलीचे बिछे थे। ठीक से कहा जाय तो यह एक विशाल मंच की तरह था और शाहज़ादा ऐसे बैठा था जैसे बादशाह बैठते हैं। जब मैं अन्दर गया तो मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ खड़ा होऊँ। दोनों ओर खड़े लोगों की पंक्तियों के बीच से होकर एक अधिकारी मेरे पास आकर बोला कि मैं अपना टोप उतारकर अपने सर से ज़मीन को छुऊँ। मैंने कहा कि मैं शाहजादे के प्रति सम्मान प्रकट करने आया हूँ और ज़रूरी नहीं है कि मैं सेवकों जैसा व्यवहार करूँ। ऐसा कह कर मैं आगे बढ़ा और शाहज़ादे के करीब पहुँच गया। वहाँ उसका सचिव खड़ा था और जो भी कुछ दिया जाता या कहा जाता वह उसे शाहज़ादे तक पहुँचाता था। शाहज़ादा तीन सीढ़ी ऊपर बैठा था। मैंने उसके प्रति सम्मान प्रकट किया। उसने भी अपना शरीर झुकाया।

अपने आने का मकसद टॉमस रो ने बताया:

मैं इंग्लैण्ड के शासक की तरफ से मुगल बादशाह के लिए राजदूत के रूप में आया हूँ और चूँकि मैं यहाँ से गुज़र रहा था इसलिए उसके प्रति सम्मान प्रकट करने चला आया। उसने जवाब दिया कि मेरा स्वागत है। मेरे राजा के बारे में उसने कई सवाल पूछे जिनका मैंने जवाब दिया। मैंने एक कुर्सी की माँग की किन्तु मुझे जवाब मिला कि यहाँ कोई नहीं बैठ सकता है।

टामस रो ने जिस सराय का ज़िक्र किया है वह आज भी अकबरी सराय के नाम से बुरहानपुर के अण्डा बाज़ार में है। इस सराय के दरवाज़े पर एक शिलालेख है जिसमें लिखा है कि इसे अकबर के समय बनवाया गया था। इसमें दर्जनों छोटे-छोटे बिना खिड़कियों के कमरे हैं। रोशनी और हवा के लिए कमरों की छत में सिर्फ लोहे का चौड़ा पाइप लगा है।

अकबरी सराय के दरवाज़े पर लगा शिलालेख

लेकिन मुझे इतनी छूट दी जा सकती है कि चन्दोबा को सहारा देने वाले चाँदी के एक खम्बे से टिक कर आराम कर लूँ। तब मैंने उससे इस शहर में एक फैक्टरी बनाने की अनुमति चाही जो उसने स्वीकार कर ली। फिर अपने बख्शी (सूबे का एक प्रमुख अधिकारी) को आदेश दिया कि वह फैक्टरी स्थापित करने और रहने के लिए टॉमस रो को फरमान जारी करे। मैंने राजा द्वारा दी गई भेंट ले जाने के लिए कुछ वाहन माँगे। इसका ज़िम्मा उसने कोतवाल को सौंप दिया। फिर मैंने उसे अपनी ओर से शराब की एक पेटी भेंट में दी। थोड़ी देर बाद मैंने उसे नशे में देखा। उसका एक अधिकारी मेरे पास आया और क्षमा माँगते हुए मुझसे लौट जाने और किसी और समय आकर शाहजादे से मिलने का निवेदन किया।

18 नवम्बर को टॉमस रो को बुखार आ गया और 24 नवम्बर तक वह बीमार रहा। जब शाहज़ादे को उसकी अस्वस्थता का पता चला तो उसने अपना एक शमशीरबाज़ और दूसरे दिन एक अधिकारी उसके पास भेजा। 27 तारीख को बड़ी कमज़ोर हालत में टॉमस रो पालकी में बैठकर बुरहानपुर से रवाना हो गया। वहाँ से बोरगाँव होते हुए वह माण्डू की तरफ गया। टॉमस रो आगे लिखता है कि 30 नवम्बर 1615 को उसे शाहज़ादा परवेज़ का फरमान मिला, जिसमें उसे बुरहानपुर में फैक्ट्री खोलने की अनुमति दी गई थी। चकमक

सभी फोटोः सुरेश मिश्र

टिलटिल कुटरू

चरणसिंह पथिक

"कैसे हो कुटरू?" टिलटिल गिलहरी ने नीम से उतरते हुए कुटरू चूहे से पूछा। "मैं तो उदास हूँ। तुम सुनाओ तुम कैसी हो?" कुटरू ने जवाब दिया।

"ओह, दुख हुआ सुनकर। बात क्या हुई? क्या तुम्हारे किसी बच्चे का कान झाड़ में उलझकर थोड़ा-सा फट गया है?" टिलटिल ने कुटरू के दुख में शामिल होते हुए पूछा। "नहीं, ऐसी बात नहीं। बात कुछ ऐसी है जिसे तुम समझ नहीं सकोगी। मैं चूहेदानी से बात शुरू करूँगा और वो तुम्हें समझ में नहीं आएगा। और चूहेदानी कहे बिना यह बात नहीं बताई जा सकती।" कुटरू ने अपनी परेशानी बताई। "ओह! चूहेदानी क्या किसी तरह के बाज़ का नाम है।" टिलटिल ने बैचेनी से कहा।

"मरा हुआ बाज़ ही समझ लो। मगर ऐसा मरा हुआ बाज़ जो धोखा देने में ज़िन्दा बाज से ज़्यादा खतरनाक हो। क्या इस तरह बताने से तुम्हें कुछ-कुछ समझ में आ रहा है?" कुटरू ने पूछा। वह उदास तो था ही।

"अब ऐसा तो नहीं है कि मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा हो।" ऐसा कहते ही टिलटिल को लगा कि इस तरह की बात तो वे ही करते हैं जिन्हें कुछ भी पल्ले नहीं पड़ रहा हो।

"मैंने सुना है कि चूहेदानी के पीछे आदमी नाम के जानवर का दिमाग काम करता है। दिमाग का जितना खराब इस्तेमाल कर सकता है, करता है वह। जैसे उसने चूहेदानी बनाकर रख दी। चूहेदानी में विज्ञापन की तरह रोटी का टुकड़ा लटका दिया। वो हमेशा यही कहता-सा दिखाई देता है - आखिर मौका है! आओ-आओ, जल्दी खाओ। रोटी के टुकड़े का विज्ञापन भूख से किलबिलाते चूहों की अक्ल को अन्धा ही कर देता है। वे बेचारे आदमी के दिमाग से चलने वाली चूहेदानी में फँस जाते हैं। कई चूहों को चूहेदानी में फँसा देखने के बाद मैं कह रहा हूँ। टिलटिल तुम्हें मेरी बात पर विश्वास तो हो रहा है न?" कुटरू ने उसी उदासी के साथ कहा, "और भी सुनो, आदमी नाम के जानवर ने चूहेदानी की तरह आदमीदानी भी बना छोड़ी है। उनमें वह आदमी पकड़ता है। है न अजीब दो-पाया जानवर!"

टिलटिल को कुटरू से दुनिया-जहान की इतनी जानकारी जानकर अचरज हो रहा था। उसने हड़बड़ी में कहा, "यह तो तुम्हारी प्रजाति के लिए बिल्ली से भी बड़ा खतरा है।"

"तो क्या मैं किसी छोटी-सी बात को लेकर उदास हूँ? मगर अब तो तुम समझ ही सकती हो कि मैं कितनी बड़ी समस्या की वजह से उदास हूँ। आदमी ने घर-घर में चूहेदानी रख दी है टिलटिल, घर-घर में! घर-घर में चूहेदानी रखना चूहों के खिलाफ कैसी साजिश है, यह मैं तुम्हें आज नहीं समझा सकता क्योंकि भूख से मेरी पीठ के बाल सूखने लगे हैं। मगर मुझे पता है कि आदमी ने दफ्तरों और स्कूलों में चूहेदानी अभी नहीं रखी है। तो क्यों न हम किसी स्कूल की ओर कूच करें। तुम्हारी निगाह में आसपास कोई राजकीय प्राथमिक स्कूल है?" कुटरू ने सुनी हुई जानकारियों के आधार पर घरों के बीच राजकीय प्राथमिक स्कूल होने की बात कही थी।

"चलो। मैं तुम्हें एक स्कूल बताती हूँ। अब यह तुम ही देख लेना कि वह राजकीय प्राथमिक स्कूल है या नहीं।" टिलटिल कुटरू को साथ लेकर स्कूल की तरफ चल पड़ी।

कुछ ही देर में वे दोनों स्कूल के उस कमरे के बरामदे में खड़े थे, जिसमें गेहूँ और चावल के कट्टे ठुँसे पड़े थे। स्कूल के पीछे के खेत से फसल काट ली गई थी। चिड़ियों ने खेत का एक-एक दाना चुन-चुनकर खा लिया था। कुटरू ने कमरे के पीछे जाकर जाली में एक सुराख बनाया और अन्दर कूद गया। अन्दर दीवार पर कई तरह के फल लटके हुए थे। असल में वे फलों के चार्ट थे। रंगीन चार्ट उसे ऐसे लगे जैसे उनसे पके-पके फल अभी टपक पड़ेंगे। वह अलमारी के ऊपर दो पैरों पर खड़ा हुआ और लपक-लपक कर उन्हें खाने लगा। बड़ी देर तक खाने पर भी उसे कोई स्वाद नहीं आया। हारकर उसने चावल के कट्टे में ही सेंध लगाई। सेंध क्या लगाई कई दाने तो बाहर ही बिखरे थे। उसने उन्हें खाना शुरू किया। पहले ही दाने से स्वाद आना शुरू हो गया। खाने की बेसुधी में वह भूल ही गया था कि बाहर टिलटिल भी है।

"कूद कर आ जाओ।" खाते-खाते ही उसने टिलटिल को पुकारा। टिलटिल आ गई तो उसने फलों के चार्ट की तरफ इशारा करके कहा, "ये दिखने में जितने स्वादिष्ट हैं खाने में उतने ही कसैले हैं। भूख मिटने का तो सवाल ही नहीं। तुम सीधे इन सफेद दानों पर टूट पड़ो।"

"ओह, मुझे टूट पड़ने की क्या ज़रूरत है कुटरू! मैंने तो अभी-अभी पीपल की फुनगियों पर खूब गोल (पीपल के फल) खाई है। पर क्या मैं ज़्यादा खाने में तुम्हारी कुछ मदद करूँ? ऐसा करें कि तुम खाओ और मैं देखूँ, क्या इससे कुछ फायदा होगा?" टिलटिल बोली।

इस तरह टिलटिल और कुटरू स्कूल की खिड़की में चाँद के आ जाने तक गपशप करते रहे। कुटरू अलबत्ता लगातार खाता रहा। उसने पेट इतना भर लिया कि अब वहाँ से चलकर जाया नहीं जा सकता था। वह वहीं चावल के कट्टे के पास सो गया। और टिलटिल चली गई नीम की कोटर में अपने रुई और सन के गर्म घोंसले में। चकमक